प्रकाशक/स्वामीत्व
रजनी (पुत्री-महेश धावनिया)

डाक पंजियन संख्या : JaipurCity/423/2017-19

श्री बाबा

प्रधान कार्यालय-सी-57, महेश नगर, जयपुर-15, मो.-9928260244 हिन्दी मासिक समाचार पत्र 7073909291 E-mail:shreebaba_2008@yahoo.com

वर्ष : 10 अंक : 10 आर.एन.आई. नं. : RAJHIN/2008/24962 जयपुर, 5 दिसम्बर , 2017 मूल्य : 5 रुपए प्रति पृष्ठ : 4

एससी-एसटी महिला जज कम होना चिंताजनकः राष्ट्रपति

17 हजार जजों में सिर्फ 4700 महिलाएं, यानी चार जज में एक

गरीब कानूनी लड़ाई से बचते हैं और संपन्न मामलों को खींचने के लिए कोर्ट का इस्तेमाल करते हैं। विरोधाभास खत्म करना होगा।

नई दिल्ली। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने न्यायपालिका में महिला, एससी, एसटी और ओबीसी जजों की कम संख्या पर चिंता जताई। नेशनल लॉ डे पर नीति आयोग विधि आयोग की ओर से आयोजित सम्मेलन में उन्होंने कहा कि लोअर कोर्ट, हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में कुल 17 हजार जज हैं। इनमें महिलाएं सिर्फ 4700 हैं। यानी चार में एक। हालात सुधारने की दिशा में फौरन कदम उठाने की सलाह दी।

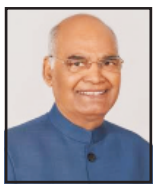

बोले- न्यायपालिका में भी देश और समाज की विविधता झलकनी चाहिए। इसके लिए जिला और सेशन जजों के कौशल को बढ़ाना होगा। ताकि ज्यादा लोगों को हाईकोर्ट में प्रमोट किया जा सके। हालांकि उन्होंने नियुक्तियों में गुणवत्ता से समझौता नहीं करने की भी सलाह दी।

21 हाईकोर्ट में 850 जज, एससी/एसटी के 14

-जएससी-एसटी कमीशन के मुताबिक 2011 में देश के 21 हाईकोर्ट में 850 जजों में सिर्फ 24 जज एससी/एसटी थे। 14 हाईकोर्ट में एक भी एससी/एसटी जज नहीं था।

- सुप्रीम कोर्ट के मौजूदा 31 जजों में से एक भी एससी/एसटी के नहीं हैं।

- सुप्रीम कोर्ट ने 2015 में उत्तराखंड के जिला जज कांता प्रसाद की कोर्ट में आरक्षण की अर्जी खारिज की थी। कहा था कि सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट समानता के सिद्धांत पर काम करते हैं।

"दलित आदिवासियों पर आयोजित राष्ट्रीय स्तर की जन सुनवाई में पुलिस हिरासत में हुई हिंसाओं पर जूरी सदस्यों ने जताई नाराजगी"

जयपुर। दलित अधिकार केन्द्र जयपुर, राष्ट्रीय दलित न्याय आन्दोलन, नई व दिल्ली, सोशल अवेयरनेश फोर यूथ, तमिलनाडू, के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 27 नवम्बर 2017 को स्वामी कुमारानन्द हॉल, चर्च रोड, जयपुर में ''दलित आदिवासियों पर राज्य द्वारा प्रायोजित हिंसा एवं मिथ्या कार्यवाही'' विषय पर राष्ट्रीय स्तर की जनसुनवाई का आयोजन सम्पन्न हुआ। जन सुनवाई में अनूभवी व प्रतिष्ठित व्यक्तियों को जूरी में रखा गया है जिनमें न्यायमूर्ति श्री पानाचन्द जैन, पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर, श्री सन्नी सेबिस्टेन, पूर्व उप कुलपति, हरिदेवजोशी, पत्रकारिता विश्वविद्यालय,जयपुर (शेष पृष्ठ 4 पर)

प्रान्तीय बैरवा प्रगति संस्था राजस्थान जयपुर की ओर से बैरवा समाज का तृतीय युवक-युवति परिचय सम्मेलन हेतु पंजीयन एवं जयपुर की परिचय निर्देशिका का प्रकाशन हेतु जनगणना जारी

जयपुर। प्रान्तीय बैरवा प्रगति संस्था की ओर से प्रदेश में समाज की अग्रणी संस्था द्वारा द्वितीय बैरवा परिचय निर्देशिका महानगर जयपुर की महत्वपूर्ण निर्देशिका हेतु जयपुर के प्रत्येक वार्ड की जनगणना का कार्य पिछले दो माह से प्रारम्भ किया जा चुका है। जिसमें जयपुर के सभी वार्डों के प्रत्येक परिवार का विवरण प्रकाशित किया जायेगा। संस्था के अध्यक्ष महेश धावनिया ने जयपुर के सभी बैरवा बन्धुओं से अनुरोध किया है कि इस पुनित कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें। जिससे जल्दी से जल्दी इस निर्देशिका का प्रकाशन किया जा सके।

गुर्जर की थड़ी क्षेत्र में श्री मदन लाल बैरवा अधीक्षक पासपोर्ट विभाग का श्री रामगोपाल जोनवाल द्वारा परिचय निर्देशिका हेतु जनगणना आवेदन फार्म भरवाते हुए।

साथ ही संस्था के महामंत्री राजेश कुमार शास्त्री एडवोकेट ने बताया कि समाज के लोगों की आवश्यकता के अनुसार संस्था द्वारा बैरवा समाज का तृतीय बैरवा युवक-युवती परिचय सम्मेलन 28 जनवरी, 2018 को किया जायेगा। परिचय सम्मेलन में सम्मिलित होने हेतु इच्छुक युवक-युवतियों एवं उनके अभिभावक अपना पंजीयन संस्था कार्यालय सी. 57, महेश नगर, जयपुर पर करवा सकते हैं। **अन्य जानकारी के लिए मो.-9928260244, 9414441044 पर सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।**

सर्वजातीय विवाह के पंजीयन शुरू

जयपुर। प्रगति सामाजिक सेवा संस्थान का चौथा निशुल्क सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन 22 जनवरी बसंत पंचमी को होगा। इसके लिए संस्थान कार्यालय प्रतापनगर, सांगानेर स्थित देहलावास बालाजी मंदिर के पीछे, गोमती अपार्टमेंट में 30 दिसंबर तक रजिस्ट्रेशन किए जाएंगे। संस्थान के प्रदेशाध्यक्ष हेतराम बैरवा ने बताया कि विवाह समारोह में नव दंपतियों को गृहस्थी के जरूरी सामान सहित उपहार स्वरूप 50 वर्गगज का भूखंड दिया जाएगा।

अन्य जानकारी के लिए मो. 8094577888 या 0141-6577888 पर सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

मालपुरा-टोडा के चुनाव संपन्न

टोंक। अखिल भारतीय बैरवा महासभा बैरवा महासभा जिला शाखा टोंक एवं तहसील मालपुरा-टोडा के चुनाव संपन्न।

जिला अध्यक्ष पद पर प्रहलाद बैरवा टोंक 445 मतों से विजई घोषित किए गए एवं महामंत्री पद पर हनुमान प्रसाद चुली को 448 मतों से विजय घोषित किया गया। मालपुरा-टोडा तहसील के अध्यक्ष एवं महामंत्री के पद पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। अध्यक्ष पद पर बनवारी लाल बैरवा मेंहरु व महामंत्री पद पर प्रभु दयाल बैरवा कडीला को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

भीमराज अध्यक्ष निर्वाचित

राजसमंद। अखिल भारतीय बैरवा महासभा जिला शाखा राजसमंद के जिला अध्यक्ष एवं महामंत्री के निर्वरोध निर्वाचित हुए। अध्यक्ष पद पर भीमराज बैरवा (भादला) राजसमन्द एवं महामंत्री के पद पर पुष्कर लाल बैरवा (मेदपुरिया)तहसील रेलमगरा जिला राजसमन्द को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

गिर्राज बैरवा महामंत्री बने

बून्दी। बून्दी जिले की तहसील नैनवा के अध्यक्ष पद पर हीरालाल बैरवा व महॉमंत्री पद पर गिर्राज बैरवा के निर्विरोध निर्वाचित होने पर चुनाव कमेटी ने दी बधाई।

वंचित समाजों ने सामाजिक राजनीतिक चेतना के साथ मांगा बराबरी का हक

जयपुर। संविधान दिवस पर रामलीला मैदान पर एससी, एसटी, मुस्लिम अन्य वंचित समाजों के लोग जुटे। उन्होंने एकजुटता दिखाते हुए संविधान प्रदत्त अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने की हिमायत की।

एकता महासम्मेलन में प्रदेश सहित अन्य राज्यों से आए वंचित समाजों के प्रतिनिधियों ने सामाजिक, राजनीतिक, सहित सभी स्तर पर बराबरी का हक मांगा। वहीं न्यायपालिका, निजी सेक्टर, रक्षा विभाग प्रमोशन में आरक्षण की हिमायत की। इस अवसर पर बाबा रामदेव जी महाराज रूणेचा समाजोत्थान विश्वविद्यालय की स्थापना करने की भी मांग उठी। महासम्मेलन में सेवानिवृत्त वरिष्ठ आरएएस अबरार अहमद ने सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ एकजुट होने का आव्हान किया।

ऑल इंडिया इंसाफ मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी अकबर कासमी, राज्यसभा सांसद अली अनवर अंसारी, रिटायर्ड आईएएस डॉ. ललित मेहरा, भारत रक्षक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मपाल कटारिया, वाल्मिकी समाज के सुरेश कल्याणी, हाजी अ. मजीद मदनी, चंडीगढ़ के गुरप्रीत सिंह, जेएनयू छात्र नेता लारेब अकरम, दिलीप शाह, मौलाना हनीफ, इस्लाम कारपेट, सलाम कायनेट, अब्दुल लतीफ आरको, डॉ. शहाबुद्दीन आदि ने संबोधित किया।

बैरवा महासभा राजस्थान की वेबसाइट लॉन्च

जयपुर। अखिल भारतीय बैरवा महासभा की राजस्थान इकाई की वेबसाइट किसान भवन में लॉन्च की गई। प्रदेश महामंत्री मोहनप्रकाश बैरवा ने बताया कि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिनारायण बैरवा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे, अध्यक्षता राजस्थान अध्यक्ष कजोड़मल बैरवा ने की। मुख्य अतिथि हरिनारायण बैरवा ने बटन दबाकर राजस्थान प्रदेश इकाई की वेबसाइट www.abbmsraj.org लॉन्च की।

समाज रत्न से 11 प्रतिभाएं सम्मानित

जयपुर। प्राकृत भारती अकादमी सभागार में रविवार को समाज रत्न सम्मान समारोह आयोजित हुआ। समारोह में 11 प्रतिभावान सेवाभावी लोगों को समाज रत्न पुरस्कार प्रदान किए गए।

सम्मानित होने वालों में वैकल्पिक चिकित्सा के लिए डॉ. अंजलि स्वामी, कैंसर उन्मूलन के लिए अनिला कोठारी, शिक्षा सहयोग के लिए दौलत राम माल्या, पर्वतारोही जैकी जैक्स कहार, चिकित्सा सेवा के लिए कानन गोलेच्छा, कला क्षेत्र में मोहन लाल चौहान, शिक्षा क्षेत्र के लिए निधि श्रीवास्तव, समाजसेवी प्रमोद शर्मा, ज्योतिष रजनी कटारिया, समाजसेवी रमेशचंद गंगवाल, शिक्षा के लिए डॉ. संजीव कुमार सिंघल, महिला सशक्तिकरण के लिए स्वीटी सोनी समाजसेवी डॉ. सुनील कु. बोकोलिया शामिल हैं। समारोह के अध्यक्ष आर. के. अग्रवाल ए.के. ऋषि, पदम कुमार जैन, राजेंद्र लुहाड़िया ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजक कमल लोचन, बी.एल. विजय, ललित दुग्गड़ सहित अन्य लोग शामिल हुए।

समाचार विज्ञापन संकलन

श्री बाबा समाचार पत्र की प्रकाशन तिथि प्रत्येक माह की 5 तारीख है। अतः समाचार एवं विज्ञापन आदि के प्रकाशन के लिए विज्ञप्ति, फोटो आदि सामग्री माह की 20 तारीख तक पूर्ण विवरण के साथ भिजवा दें। सम्पर्क करें:

श्री बाबा whatsapp **7073909291**

सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15

मो.-9928260244 E-mail : shreebaba_2008@yahoo.com

20वीं पुण्यतिथि

स्वर्गीय श्री हरिशंकर सिद्धांत शास्त्री जी

पूर्व विधायक (5 दिसम्बर,1997)

सामाजिक, राजनैतिक उत्थान के कार्य एवं बैरवा शब्द प्रदान करने वाले महापुरुष को नत-मस्तक हो कर अश्रुपुरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

श्रद्धावनतः ओमप्रकाश आर्य (से.नि. संभाग प्रबन्धक रोडवेज), श्रीमती कृष्णा देवी, श्री नवल कुमार बैरवा पूर्व आर.पी.जी. मैम्बर, श्रीमती निर्मला देवी (पुत्र-पुत्रवधु), भरत कुमार आर्य, मिनाक्षी, राजेश कुमार शास्त्री, गीता शास्त्री, विजय कुमार, कान्ता देवी (पौत्र-पौत्र वधु), दीपक, लक्ष्य, मोहित खुशहाल, दिव्यांश, रिया पड़पौत्र-पड़पौत्री, विद्या कुमारी सी.आई. आबकारी विभाग, अर्जुन गोठवाल चीफ इंजिनियर (दामाद)।

सम्पादकीय

सेवा धर्म

मनुष्य का एक ही मित्र है-धर्म। और धर्म क्या है-दूसरों को ईर का अंश मानते हुए उनकी भलाई के लिए कार्य करना। यदि कोई व्यक्ति सेवक बनकर किसी की सेवा करता है, तो उसे परम संतोष और विशेष शांति मिलती है। सेवा के लिए मनुष्य के मन में सर्वप्रथम यही विचार आने चाहिए कि दुखी व्यक्ति भी अपना है। और यदि यह दुखी रहेगा, तो मैं भी दुखी रहूंगा। यानी जब हमारे हृदय में दया एवं अपनत्व का भाव होगा, तभी हम सेवा के लिए तत्पर हो सकेंगे। उदाहरणस्वरूप-किसी को ठंड में कंपकंपाते हुए देखने पर हमारा शरीर भी उस ठंड को महसूस करेगा, तब उस व्यक्ति के लिए कंबल की व्यवस्था करने का सेवाभाव हमारे मन में जागृत होगा। दरअसल, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके चारों ओर उसके संबंधी-मित्र-पशु-पक्षी इत्यादि का समुदाय दृष्टिगोचर होता है और वह इनके बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता है। ऐसे में, एक-दूसरे की मदद करना ही उनका कर्तव्य-धर्म है। खास बात यह कि सेवा में अहंकार का भी नाश होता है, जो ईर प्राप्ति में सबसे बड़ा बाधक है। दरअसल, सेवा का मतलब समर्पण है, विास है। समर्पण क्या है? एक बरगद ने ताउम्र लोगों की सेवा की। लोग उसकी छाया में बैठते थे जबकि त्योहारों पर महिलाएं उसकी पूजा करती थीं। जब वृक्ष बूढ़ा हो गया तो वह सूखने लगा, उसकी जड़ें भी कमजोर हो गई। लोग उसे काटने के लिए आरी-कुल्हाड़ी ले आए। उस बरगद के पास खड़ा एक नन्हा वृक्ष बोला-दादा ये कैसे स्वार्थी लोग हैं! जिन्होंने आपकी छाया ली, वे ही आज आपको काटने आ रहे हैं? क्या आपको गुस्सा नहीं आ रहा है? बूढ़े बरगद ने कहा-''गुस्सा किस बात का? मैं यह सोचकर प्रसन्न हो रहा हूं कि मैं मरने के बाद भी इनके काम आ रहा हूं।' यही समर्पण है। हर हाल में अपने दिल में परोपकार की भावना रखना। अब सेवा में विास क्या है, उसे समझते हैं। सेवा कई तरह की होती है। कई बार व्यक्ति सकाम सेवा करता है। यह सेवा दूसरे से लाभ लेने या फिर नुकसान पहुंचाने के लिए की जाती है। यह तामसिक सेवा कहलाती है। लेकिन जो निष्काम भाव से सेवा करता है, तो वह सात्विक होती है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है। रामायण काल में जटायु का बलिदान इसलिए महान बन गया, क्योंकि सीता की आर्त पुकार सुनकर, सामर्य न होते हुए भी उसने रावण से मोर्चा लिया और मोक्ष प्राप्ति की।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता
100 रुपए
विशिष्ट द्विवार्षिक सदस्यता
500 रुपए
साथ में पाएं दो वैवाहिक एवं एक क्लासीफाइड डिस्प्ले विज्ञापन बिल्कुल मुफ्त
आजीवन सदस्यता
2100 रुपए
संरक्षक सदस्यता
5100 रुपए

''राष्ट्रीय उत्थान में डॉ. अम्बेडकर का योगदान''

युवा कारवां वाहक

गतांक से आगे

कांग्रेस की राजनैतिक सुधार एवं स्वराज्य की मांग के संदर्भ में बाबा साहब का स्पष्ट मत था कि राजनैतिक स्वतंत्रता से यह सामाजिक स्वतंत्रता जरूरी है बिना सामाजिक सुधारों के स्वराज्य बेमानी होगा।

बाबा साहब के विचारों एवं आंदोलनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि उनके आंदोनल धार्मिक गुलामी, अमानवीय सामाजिक व्यवस्था (जातिवाद),स्त्री पराधीनता, रूढिवाद एवं सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ थे। राजनैतिक सत्ता तो केवल माध्यम था उन महान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, जिनके कि वो हिमायती थे। संक्षेप में बाबा साहब के आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ''नवजागरण'' अर्थात् संपूर्ण सामाजिक परिवर्तन था। और बाबा इस नवजागरण अर्थात् कारवां को यहां तक कैसे लेकर आएं। जो गुलाम संघर्ष करना ही नहीं जानता था अन्याय को सहन करते रहता था तथा उसमें मनोबल नाम की चीज ही नहीं थी उस गुलाम को बाबा साहब ने अपने महान एवं कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन के माध्यम से संघर्ष का रास्ता

अपनाने के विरोध की भावना में लड़ना सिखाया ऐसी बात नहीं थी कि अछूत, चावदार (तालाब का पानी पीकर जिंदा थे। वे पानी तो पहले भी पी रहे थे, परन्तु चावदार तालाब के पानी के लिए आंदोलन अपने कानूनी हक व अधिकार के लिए था, समानता के व्यवहार के लिए था। ठीक उसी प्रकार से कालाराम मंदिर प्रवेश अपनी धार्मिक स्वतंत्रता को पुष्ट करने के लिए था।) गालमेज सम्मेलन से गांधी एवं कांग्रेस के कुचक्रो से बचकर निकलना ही नहीं, अछूतों के लिए पृथक निर्वाचन मण्डल तथा द्वितीय चुनाव प्रणाली हासिल करना उनकी सबसे बड़ी राजनीतिक जीत थी। इसी गोलमेज सम्मेलन से बाबा साहब ने अछूतों के लिए एक अलग पहचान बनाई अन्यथा वो तो हिन्दुओं के साथ नरमी कर रहे थे।

हालांकि गांधी के विरोध के चलते द्विमतीय पृथक निर्वाचन मण्डल अमल में नहीं आया, परन्तु इस अधिकार की घोषणा ने अछूतों में गजब के मनोबल का संचार किया, सवर्णों की दुर्भावंत खुलकर सामने आई तथा अछूतों को एक अलग वर्ग के रूप में पहचान मिली।

बाबा साहब ने जीवन पर्यन्त सामाजिक सुधारों के लिए लड़ाई लड़ी। उनके आंदोलन ने भारतीय जनमानस को रूपांतरित किया। छुआछूत पर प्रतिबंध, शिक्षा का अधिकार, व्यस्क मताधिकार, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष, हिन्दू कोड बिल के आधार से धार्मिक सुधार एवं महिला सशक्तिकरण इत्यादि ऐसे कुछ उदाहरण है जो बाबा साहब को मानवाधिकारक के महानायक तथा महान समाज सुधारक स्थापित करते हैं। आज हमारे सामने महत्वपूर्ण सवाल है कि हम बाबा साहब के कारवां को आगे कैसे ले जाएं?

किसी भी कार्य में सफलता उस कार्य के उद्देश्य है। उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योजना तथा योजना पर कार्य का प्रतिफलन है। कारवां का उद्देश्य है नवजागरण तथा हमारे पास अंबेडकरवाद के रूप में बहुत ही बढ़िया योजना ही, परंतु योजना पर कार्य नहीं हो रहा है और जो कुछ कार्य भी हो रहा है वह आंतरिक कलह, प्रतिद्वंद्विता तथा बाहरी घुसपैठ ने बर्बाद कर दिया है अत: कारवां दुर्घटनाग्रस्त पड़ा है। किसी भी कारवां को आगे ले जाने की जिम्मेदारी तीन व्यक्तियों पर होती है-विचारक, प्रचारक एवं सक्रिय प्रतिभागी।

क्रमश:

वैवाहिक

वर चाहिए

* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-बी.एस.सी., बी.एड. स्टेनोग्राफर, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-भीयाणा, बंशीवाल, गंगवाल, जोनवाल।
* दिल्ली निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.कॉम., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-जोनवाल, कुण्डारा, सुलानिया।
* फरीदाबाद निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-मरमट, जाटवा, मुरारिया।
* फरीदाबाद निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-मरमट, जाटवा, मुरारिया।
* जयपुर निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-एम.एस.सी., गौत्र-मीमरोठ, जाटवा, बंसीवाल, सामने लकवाल व मुरारिया ना हो। मो.-7976069646
* अजमेर निवासी 22 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक., पिता-निजी कार्य, गौत्र-मीमरोट, लोदवाल, जोनवाल, मो.-9425422158।
* जयपुर निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-एमबीए, पिता-बैंक सेवा, गौत्र-जारवाल, नागरवाल,मेहर, मो.-9784513332
* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-एमबीए, पिता-बैंक सेवा, गौत्र-जारवाल, नागरवाल,मेहर, मो.-9784513332
* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-टाटीवाल, बड़गोती, जारवाल, सामने महेर न हो।
* जयपुर निवासी, 24 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., पिता-निजी कार्य, गौत्र-नागरवाल, चरावण्डिया, जीनवाल, गोमलाडू।
* जयपुर निवासी, 33 वर्ष, शिक्षा-बी.एच.एम.एस., वर्तमान में राजकीय आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-जोनवाल, मीमरोट, जारवाल, सामने नगवाड़ी हो।
* दौसा निवासी, 18 वर्ष, शिक्षा-11वीं, पिता-निजी कार्य, गौत्र-शक्करवाल, चन्दवाड़ी, नंगवाड़ी, धावणिया, सामने बंशीवाल व देवतवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक, पिता-एन.बी.सी. में कार्य, गौत्र-गोमलाडू, बुहाड़िया, बेथाड़िया, सामने कुवाल न हो, मो. 7737809997
* जयपुर निवासी, 20 वर्ष, शिक्षा-बी.ए. द्वितीय वर्ष, गौत्र-मरमट, राजलवाल, नागरवाल, बेथाड़िया, सामने जारवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 19 वर्ष, शिक्षा-बी.ए. द्वितीय वर्ष, गौत्र-मरमट, राजलवाल, नागरवाल, बेथाड़िया, सामने जारवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-बी.बी.ए., पीजीडीसीए, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-भुराहाड़िया, गौनावत, सिरोहिया, मो.-7597493946।
* जयपुर निवासी, 26वर्ष, शिक्षा-एम.कॉम., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-गोठवाल, सिसोदिया, जाटवा, लोडतीया।

वधू चाहिए

* हनुमानगढ़ निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-10वीं पास, वर्तमान में दिल्ली में प्रिंटिंग प्रेस पर कार्यरत, गौत्र बंशीवाल, चरावण्डीया, नीमरोट।
* जयपुर निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक, वर्तमान में आई.टी. विभाग में प्रशासनिक अधिकारी, पिता-निजी कार्य, गौत्र-चरावण्डिया, बुहाड़िया, लोदवाल, टाटीवाल, सामने-परालिया ना हो।
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.एस.सी. नर्सिंग, वर्तमान में-एआईएमएस में कार्यरत, गौत्र-मीमरोठ, जाटवा, बंशीवाल, सामने लकवाल एवं मुराड़िया ना हो।
* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक, वर्तमान में सहायक लेखाधिकारी भारत सरकार, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-सुलानिया, राजलवाल, बीलवाल, सामने बैण्डवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक, वर्तमान में बैंक में कनिष्ठ लिपिक, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-मेहरा, बेन्दाड़ा, बंशीवाल, सामने लोदवाल व भीमवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 23 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-मिमरोठ, जारवाल, बंशीवाल, सामने रेसवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-12वीं, वर्तमान में प्राईवेट ड्राईवर, गौत्र-लोदवाल, कुवाल, मुराडिया, सामने बिन्दावड़िया न हो।
* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक, वर्तमान में केन्द्रीय राजकीय सेवा, पिता-पिता राजकीय सेवा, गौत्र-लोदवाल, कुण्डारा, बड़ागोती, सामने मिमरोठ न हो।
* करौली निवासी, 26वर्ष, शिक्षा-एम.बी.बी.एस., वर्तमान में राजकीय चिकित्सा अधिकारी, पिता-निजी कार्य गौत्र-जाटुवा, बमणावत, बंशीवाल, सामने भरतोनियां।
* करौली निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-बी.ए.एस.एस., राजकीय आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-जाटवा, जोरवाल, आकोदिया।
* जयपुर निवासी, 26वर्ष, शिक्षा-11वीं, वर्तमान में स्वयं का व्यवसाय, गौत्र-बैण्डवाल, लोदवाल, नंगवाड़ी, मो. 9829599054।
* दिल्ली निवासी, 37 वर्ष, शिक्षा-बी.कॉम, एम.सी.ए., एम.ए.सी. (आई.टी.), वर्तमान में स्वयं का कोचिंग सेन्टर, गौत्र-बंशीवाल, धवन, घुणावत, सामने देवतवाल न हो।
* अलवर निवासी, 43 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.कॉम., वर्तमान में सहायक लेखाधिकारी, पिता-कृषि कार्य, गौत्र-देवतवाल, सुलानिया, जाटवा, बड़ौदी, सामने कुण्डारा न हो।
* जयपुर निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक., वर्तमान में व्याख्याता सरकारी, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-डोरिया, देवतवाल, मिमरोठ, सामने सिवत्या एवं बोहरा न हो।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें
मो.: 9928260244

पुलिस सुरक्षा में घोड़ी चढ़ा दलित दूल्हा

बोराड़ा। तहसील के झिरोता ग्राम पंचायत के गांव सरवर में गत दिनों घोड़ी

पर एक दलित दूल्हे की धूमधाम से बिन्दौली पुलिस व प्रशासन की सुरक्षा में निकालनी पड़ी। कुछ ग्रामीणों के कथित विरोध की वजह से पुलिस प्रशासन को

यह कदम उठाना पड़ा। बैरवा समाज के किशनगढ़ तहसील अध्यक्ष रघुनाथ बैरवा ने एक दिन पहले प्रशासन को शिकायत कर अवगत कराया कि सरवर निवासी प्रधान बैरवा की घोड़ी पर निकासी को लेकर गांव के कुछ प्रभावशाली लोगों ने उसे घोड़ी व बैंडबाजे के साथ बिन्दौली नहीं निकालने के लिए धमकाया है।

मामले को गंभीरता मानते हुए प्रशासन ने दूल्हे को पूरी सुरक्षा मुहैया कराने के निर्देश दिए। किशनगढ़ एसडीएम अशोक कुमार, अरांई तहसीलदार रामकिशोर मीणा, किशनगढ़ पुलिस उपाधीक्षक ओमप्रकाश, नसीराबाद डिप्टी मोटाराम बेनीवाल, बोराड़ा थानाधिकारी रामनारायण ताखर, नसीराबाद सीआई रामावतार ताखर, अरांई थानेदार तेजाराम समेत अजमेर पुलिस लाइन व आरएएस के जवान मौके पर पहुंचे। पुलिस व प्रशासन की मौजूदगी में दलित दूल्हे प्रधान को घोड़ी पर बैठाया व गाजे-बाजे के साथ बिन्दौरी निकासी हुई।

31 दिसम्बर को महर्षि बालीनाथ जयन्ती एवं बैरवा दिवस पर हार्दिक शुभकामनाऐं

श्री श्री 1008 सन्त सिरोमणी महर्षि बालीनाथ जी महाराज संक्षिप्त परिचय

महर्षि बालीनाथ जी ब्रह्मचर्य युक्त एक पराक्रमी तपवस्वी चमत्कारी चतुर्थ देहधारी उच्च कोटि के महान् सन्यासी थे। वे

भक्ति एवं वैराग्य ही नहीं अपितु करूणां की गंगोत्री बनकर दलितोंत्थान हेतु राजस्थान की धरा पर आये। उनका जीवन काल्पनिक नहीं, अपितु यथार्थवादी एवं दलित शोषित पीडितो की करूणा से भरा हुआ था। आप पलायन नहीं परिवर्तन के हिमायती थे। महर्षि बालीनाथ जी का आविर्भाव 9 मार्च 1869 तदानुसार फाल्गुन सुदी सप्तमी (महाशिवरात्रि) विक्रम सम्वत् 1926 बुधवार को चन्द्रवंश कुल में किशनलाल भैण्डवाल के घर तहसील लालसोट ग्राम मंडावरी, तत्कालीन रियासत जयपुर वर्तमान जिला दौसा राजस्थान में हुआ। उनकी माता का नाम सुन्दर बाई तथा उनके बचपन का नाम नन्दाराम था। बाल्याकाल से ही आपमें धार्मिक व सात्विक प्रवृत्ति के गुणों का समावेश के साथ-साथ ईश्वर उपासना एव एकान्त चिन्तन में विशेष रूचि थी। जिससे घर वालो को सन्देह होने लगा कि ये सन्यासी बन कर कही चले न जाये। इसलिए उनका ध्यान संसारिक सुखों की ओर आकर्षित करने हेतु अल्पायु में गंगापुर के रामधन की पुत्री चम्पा के साथ विवाह कर दिये। परन्तु अन्तरंग परमात्मा की आतुरता के फलस्वरूप अकस्मात बाल्यावस्था में ही पूर्णत: गृह परित्याग कर प्रस्थान कर गाँवों में यजुमानों से दान दक्षिणा लेकर वापस जा रहे गंगा गुरू के साथ सौरोजी चले गये और उनके पास विद्याध्ययन प्रारंभ किया।

तदुपरान्त सौरोजी गंगा गुरू परिवार के साथ हरिद्वार कुम्भ के मेले में आ गये। वहाँ बड़नगर आश्रम के महन्त हीरानन्द भारती जी की जमात में सम्मिलित होकर बड़नगर चले गये। महन्त हीरानन्द भारती जी ने उन्हे शिष्य बनाकर शिवभारती नाम रखकर आश्रम अधिष्ठाता बना दिया। किन्तु किशोरावस्था के कारण वृद्ध साधु उन्हे महन्त नही। मानते हुए आलोच्याकारी बनने लगे। इस कलह से व्यथित होकर साधुओं की मण्डली के साथ काशी नगरी की ओर प्रस्थान कर गये। वहाँ प्राचीन साधुओं के अखाडों में रहकर योग साधना में लग गये। काशी में प्रख्यात पंडित गंगाधर जी के अचानक सम्पर्क में आये उनके सन्तान नहीं थी वे उन्हे अपने पास पुत्रवत रखकर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया और कुशाग्र बुद्धि एवं विलक्षण प्रतिभा के फलस्वरूप शीघ्र ही वेदशास्त्रों सहित सभी विषयों में पारंगत हो गये। संस्कृत भाषा का ज्ञान अर्जित करने के दौरान आपकी वैराग्यवृत्ति एवं ईश्वर प्राप्ति की अभिलाषा प्रबल होती गई। तत्पश्चात् पंडित गंगाधर जी से आज्ञा लेकर मण्डावरी के समीप सूरजपुरा में नाथ सम्प्रदाय के महन्त स्वामी तुम्बीनाथ जी का आश्रम था। स्वामी तुम्बीनाथ जी सान्निध्य में साधु जीवन अपना ने पर बालकनाथ नाम रखा। आपने कुछ समय पश्चात् अपने गुरू की आज्ञानुसार तीर्थाटन पर चल दिये, रास्ते में एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने बैठे थे, वहां पास में लग रहे मेले में आने जाने वालो का तांता लगा हुआ था। उनमें से एक वृद्ध महिला ने उनकी ओर संकेत देते हुए कहा कि यह तो चम्पा का पति हैं। यह सुनकर बहुत तादद में स्त्री-पुरूष बालकनाथ जी के पास आ गये, उन्होने अपनी विवाहिता चम्पा को पहचान कर सभी को वहीं ठहरने के लिए आग्रह कर मेले में जाकर ओढ़नी व चूड़ियां लाकर सभी महिलाऐं पुरूषो के समक्ष चम्पा को ओढ़नी व चूड़ियां देकर कहा कि मेरा तुम्हारा मार्ग अलग-अलग है, मैं एक वैरागी साधु हूँ और साधु की नजर में सभी स्त्रियाँ माता व बहन समान होती है, इसलिए मेरे से तुम्हारा अब कोई संबन्ध नहीं है तथा मेरी तरफसे तुम आजाद हो। इस प्रकार भृतहरि की भाँति उन्होंने अपनी विवाहिता को बहन सम्बोधित कर स्त्री बंधन से मुक्त होकर तीर्थाटन के लिए प्रस्थान किया। उक्त घटना से चम्पाबाई को भारी आघात पहुचा और उसने भी सांसारिक सुखों को त्यागकर पीहर (मायके) में साध्वी जीवन आरम्भ कर अपना सारा जीवन ईश्वर भक्ति एवं जनकल्याण में समर्पित कर दिया। बालकनाथ जी अमरेश्वर महादेव की खोह, अलखनन्दा संगम, हिमालय पर्वत, बद्रीनाथ, निर्जन वन पहाडी तथा गुफाओं में समाधिवस्था निर्जल निराहार रहकर कठोर तपस्या कर दूर दृष्टि एवं चतुर्देहधारी अर्थात एक से अधिक देह धारण की अद्भूत चमत्कारी योग विद्या प्राप्त कर बहुत बड़े तपोनिष्ठ साधु बने। आपके चमत्कारों की अनेकों लघु कथाऐ प्रचलित हैं।

सवाई माधोपुर वाले मास्टर केसूराम के कथनानुसार तपस्या के पष्चात् अपनी जन्म भूमि वापस लौटे तब हष्ट-पुष्ट, गोरवर्ण, लम्बा कद, खड़ाऊधारी, लम्बी जटा भाल तिलक तेजस्वी साधु रूप में थे। स्वामी तूम्बीनाथ जी उनकी तपस्या से खुश होकर विशाल संत्सग का आयोजन कर श्री श्री 1008 श्री सन्त शिरोमणि की पदवी से सुशोभित कर महर्षि बालीनाथ नामकरण किया। स्वामी तूम्बीनाथ जी के सम्पर्क में रह कर महर्षि बालीनाथ जी ने निर्विकल्प साधना द्वारा सत्यमार्ग की प्राप्ति के पश्चात् लोकहित के लिए अनेक गाँवों/शहरों ढाणियों में घूम-घूमकर ज्ञानोपदेश द्वारा मानव को अज्ञान रूपी निद्रा से जगाकर गृहस्थ जीवन निर्वाह करने का सुगम मार्ग प्रशस्त किया। समाज में आमूलचुक परिवर्तन लाने के लिए उन्होने पहला परिवार सुधार, दूसरा समाज सुधार का कार्य किया।

1, परिवार सुधार,- महर्षि जी मद्यमासक जैसे अपवित्र खान-पान करने वालो के घर का पानी तक नहीं पीते थे, मास-मदिरा का सेवन करने वालो पर कडा प्रहार कर कहते थे कि-

मॉस खाय मदिरा पीवे, करे पर त्रिया से हेत।
वह नर नरक भोगता, मात पिता गुरू समेत।
जैसा खायेगा अन्न, वैसा उसका मन
जैसा पीयेगा दूध, वैसा होगा सपुत
जैसा पीयेगा पानी, वैसी बोलोगे वाणी
जैसी करेगा संगत, वैसी आयेगी रंगत
तन पवित्र सेवा करो, धन पवित्र कर दान।
मन पवित्र भक्ति करो, इस विध हो कल्याण।

महर्षि जी के प्रवचन सुन कर लोग स्वयच्छा अपवित्र वस्तुओं को त्यागने लगे और नहीं त्यागने वालों को भी सदैव के लिए त्यागने की प्रतीज्ञा करने के पश्चात् ही उनके घर पर भोजन करते थे इस प्रकार उन्होने परिवार सुधार का कार्य किया।

2, समाज सुधार- उन्होने किसी भी अनुयायियों की भेट श्रीफ्ल अथवा नकद राशी को उन्होने कभी स्वीकार नहीं की। इस पर उनका कथन था कि मुझे द्रव्य नहीं, तुम्हारे दुर्गुण चाहिए। यदि मुझे भेट देना ही चाहते हो तो सभी मिलकर निरक्षरता, बाल-विवाह, अंधविशवास, जैसी कुरीतियों को त्यागकर मेरी झोली में डाल दो जिससे हम सभी का उद्धार होगा। इस प्रकार धन की लालसा न रखकर अनुठी भेंट लेकर समाज सुधार का कार्य किया। शिक्षा की ओर लोगों का ध्यान आक्रसित करते हुए कहते कि-

शिक्षा के अभाव में मति नष्ट हुयी
मति के अभाव में नीति नष्ट हुयी
नीति के अभाव में गति नष्ट हुयी
गति के अभाव में वित्त नष्ट हुआ
वित्त के अभाव में समस्त सर्वहारा दलितो का पतन हुआ।
पतन के लिए इन्हे गाली देना काम नहीं आएगा, तुम भी पढों और इनके बराबर हो जाओ।

महर्षि जी अपनी 12 वर्षीय कठोर तपस्वी शक्ति दलितोंत्थान हेतु समर्पित कर अवर्णित कुरबानी देकर सामन्तो की गुलामी से मुक्त करा के सामाजिक एवं धार्मिक अधिकार दिलाये।

महर्षि बालीनाथ जी अपनी मात्र भूमि में माघ सुदी नवमी संवत् 1983 गुरूवार 10 फरवरी को ब्रह्मलीन हो गये। ग्राम मण्डवरी में उनकी समाधि एवं मदिर बने हुए है, जिस पर प्रतिदिन सम्पूर्ण धार्मिक विधि-विधान के साथ पूजा व आरती की जाती है, आरती में भक्तगण बडी संख्या में भाग लेते हैं। इस हरिच्छादित धाम पर सभी धर्म सम्प्रदायों के हजारों की तादात में श्रद्वालु दर्शनार्थ हेतु आते हैं। उनकी पावन पवित्र धाम मण्डावरी में महाशिवरात्रि को प्रति वर्ष मेला लगता हैं। मेले की पूर्वसंध्या पर विशाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसमें राष्ट्रीय स्तर के कवियों, लोक संगीतकारों तथा भजन गायकों दारा अनेक प्रस्तुतियां पैश की जाती हैं। महाशिवरात्रि को प्रातकाल महर्षि बालीनाथ जी की विशाल शोभायात्रा निकाली जाती है और दिन भर देश के कोने-कोने से नर-नारी व बच्चे रंग बिरंगी पोशाकों में सजे-धजे लाखों श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है, जो दर्शनार्थी मेले में आकर मन्नत मांगते है, उनकी मनोकामनाऐं पूर्ण होती हैं। इसलिए ग्राम मण्डावरी की पहचान सम्पूर्ण भारतवर्ष के में पूरे देश में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता हैं।

बैरवा समाज ईष्ट देव एवं दलितों के भाग्य विधाता प्रात: स्मरणीय तपोनिष्ठ चतुर्देहधारी सन्त शिरोमणि श्री श्री 1008 श्री महर्षि बालीनाथ जी का नाम बडी श्रद्धा के साथ लिया जाता हैं।

प्रेरक प्रसंग

पाठकों आपको भली भाँति ज्ञात होगा कि बैरवा समाज ईष्ट देव एवं दलितों के भाग्य विधाता प्रात: स्मरणीय तपोनिष्ठ चतुर्देहधारी सन्त शिरोमणि श्री श्री 1008 श्री महर्षि बालीनाथ जी का नाम बडी श्रद्धा के साथ लिया जाता हैं। इतिहासकारों विद्वानों एवं जनश्रुतिया, किवदतियों के अनुसार उनके तुल्य इस समाज में ऐसा कोई महान संत महात्मा नहीं हुआ। इस समाज के संतो ने ईश्वर भक्ति की लडाई अवश्य लडी पर सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति में सफलता कम हासिल कर पाये। क्योंकि वे अपनी ही जाति समुदाय तक सीमित रहे। महर्षि जी ने जात-पांत के बन्धन से ऊपर उठ कर गाँव-गाँव शहर-शहर में घुम कर सारा जीवन शोषित पीडीतों का उत्थान कर उन्हे राष्ट्र के विकास की मुख्य धारा से जोडने का कार्य किया। बैरवा समाज के लोग गॉव नगर तथा कस्बों में अपने ईष्ट देव प्रात: स्मरणीय तपोनिष्ठ चतुर्देहधारी परमपूज्य सन्त शिरोमणि श्री श्री 1008 श्री महर्षि बालीनाथ जी के देवालय स्थापित कर बड़ी ही श्रद्धा के साथ पूजा अर्चना करते हैं।

- महर्षि बालीनाथ देवालय किशनपुरा उज्जैन मे स्थापित हैं।
- महर्षि बालीनाथ मंदिर बागपुरा उज्जैन में हैं।
- महर्षि बालीनाथ छात्रावास नैनवा जिला बून्दी।
- महर्षि बालीनाथ चौराहा मालवा मिल इन्दौर में हैं।
- महर्षि बालीनाथ मार्ग नजफाढ रोड़ से रघुवीर नगर चौक तक दिल्ली में हैं।
- दौसा जिले की तहसील लालसोट के ग्राम बडकापडा मे श्री प्रभुनाथ जी प्रति वर्ष महर्षि बालीनाथ जी के नाम पर विशाल भण्डारे का आयोजन कर ब्रह्मभोज/महाप्रसाद का वितरण करते आ रहे हैं।
- दौसा जिले के लालसोट से मण्डवरी महर्षि बालीनाथ जी के लिए हर वर्ष पैदल यात्रा की जाती हैं।
- महर्षि बालीनाथ पार्क इन्दौर में 31 दिसम्बर से 6 जनवरी तक सात दिवसीय मेला लगता हैं।
- मध्यप्रदेश सरकार ने सन् 1988 में 31 दिसम्बर महर्षि बालीनाथ जी की स्मृति में राजकीय अवकाश घोषित किया था किन्तु दलगत राजनीति के परिणाम स्वरूप उसे ऐच्छिक अवकाश में परिवर्तित कर दिया।
- मध्यप्रदेश सरकार ने उज्जैन में संत शिरोमणी महर्षि बालीनाथजी की मूर्ति बनवा कर तीन बत्ती चौराहे पर लगाई। मूर्ति का अनावरण 23 जून 2015 को हजारों की संख्या में उपथित जनसमूह के विशाल सामारोह में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने किया गया हैं।
- मध्यप्रदेष सरकार ने उज्जैन के किशनपुरा में 3 करोड 86 लाख रूपये की लागत से बालीनाथ जी समूदायिक भवन का निर्माण करवा के बैरवा समाज बहुत बडी सोगात दी हैं। 23 जून 2015 को नवनिर्मित भवन का लोकार्पण मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने किया हैं।
- महर्षि बालीनाथ जी की 8 लाख रूपये लागत की आदमकद अष्टधातु प्रतिमा मालवा मिल चौराहे इन्दौर में लगाने का कार्य अंतिम चरण में हैं।

महर्षि बालीनाथ जी साहित्य

महर्षि बालीनाथ जी के जीवन दर्शन पर अनेक साहित्यकारों ने पुस्तकों व लेखको के माध्यम से समय-समय पर रचना करते रहे है उनमें मुख्य इस प्रकार है-

- शिवप्रसाद जी मरमट पूर्व राट्रीय महामंत्री अखिल भारतीय बैरवा महासभा दिल्ली वाले ने बैरवा ज्योति मासिक पत्रिका में सन्त शिरोमणि महर्षि बालीनाथ जी के जीवन का वृतान्त प्रकाशित कर जन-जन तक पहुचाते रहे।
- आर सी वट संस्थापक संत बालीनाथ शोध संस्थान उज्जैन ने साहित्य के माध्यम से महर्षि जी के दलितोंत्थान कार्यकलापों को प्रकाशित कर जन-जन तक पहुचाने का कार्य कर रहे हैं।
- सुप्रसिद्व साहित्यकार पुरूषोत्तम जी सत्यप्रेमी ने बैरवा चेतना मासिक पत्रिका एवं बैरवा समाज एक परिचय पुस्तक तथा अनेक साहित्य प्रकाशित कर उनमें सन्त शिरोमणि महर्षि बालीनाथ जी के जीवन वृतान्त को बडेअच्छे ढंग से प्रस्तुत किया हैं।
- स्वामी हरिहरानन्द त्यागी जी ने महर्षि जी के जीवन दर्शन से लोगों को अवगत कराते रहे हैं।
- लालचंद जी गोमे राट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय बैरवा एकता महासभा उज्जैन वाले ने समय-समय पर महर्षि बालीनाथ जी जीवन परिचय तथा उनके चमत्कारों को पम्पलेटो, पोस्टरों के माध्यम से लोगों तक पहुचाते रहे हैं।
- साहित्यकार एवं समाज सेवक माँगीलाल जी पालीवाल (बैरवा) ने भगवान बालीनाथ जीवन दपर्ण नामक पुस्तक की रचना कर महर्षि बालीनाथ जी के समाजोत्थान के कार्यो का उल्लेख तथा उनके चमत्कारों का समाहित कर पाँच हजार प्रतियाँ नि:शुल्क वितरण की हैं।
- अशोक कुमार बैरवा सम्पादक स्तम्भ मासिक पत्रिका ने बैरवा महर्षि बालीनाथ जी के जीवन का वृतान्त को में समय-समय प्रकाशित करते रहे हैं।
- प्रभुलाल जी बैरवा मुख्य सम्पादक बैरवा युग हिन्दी मासिक समाचार पत्र के माध्यम से समय-समय पर महर्षि बालीनाथ जी के जीवन प्रकाशित करते आ रहे हैं।
- महेश धावनिया श्री बाबा हिन्दी समाचार पत्र के माध्यम से समय-समय पर बालीनाथ जी के जीवन प्रकाशित करते आ रहे है।
- श्रीमती अनिता बिलावल सम्पादक बैरवा दर्पण त्रैमासिक पत्रिका में महर्षि बालीनाथ जी के जीवन संबधित लेख प्रकाशित कर रही हैं।
- प्रदेश सरकार ने 3 लाख 86 हजार रूपये की लागत का नवनिर्माण महर्षि बालीनाथ भवन किशनपुरा उज्जैन में और महर्षि बालीनाथ जी की मूर्ति त्रिमूर्ति चौराहे उज्जैन में स्थापित की हैं। भवन का उद्घाटन एवं मूर्ति का अनावरण मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने 27 जून, 2015 को किया।

बैरवा दिवस पर इनको भी याद करना चाहिये

जयपुर। पूर्व विधायक स्व. श्री हरिशंकर सिदान्त शास्त्री का जीवन परिचय देते हुए उनके सुपुत्र श्री नवल कुमार बैरवा ने श्री बाबा समाचार पत्र को एक इन्टरव्यू में अवगत कराया- श्री हरिशंकर सिद्धान्त शास्त्री जी का जन्म एक मध्यम वर्ग के परिवार में तोपखाने का रास्ता, जयपुर में दिनांक 3 जुलाई, 1918को माता श्रीमती कानी देवी पत्नी श्री भौंरी लाल जी के हुआ। इनके दादा श्री किशन दास जी उर्फ स्वामी मुनिस्वारनन्द जी महाराज थे। आप प्रखण्ड विद्वान एवं आर्य सन्यासी थे। स्वामी जी को अपने पोते शास्त्री के होने पर बड़ी खुशी हुई। उन्होंने इसके बचपन के स्वभाव एवं फेसरीडिंग को भांप कर बता दिया कि भौंरी लाल ये बालक बहुत ही सेवाभावी, मधुर स्वभाव का, विद्वान एवं बड़ा आदमी बनेगा। इनके पिता श्री भौंरी लाल जी ने बड़े लाड-प्यार के साथ परवरिश करते हुए हर संभव प्रयास करके उनकी शिक्षा-दीक्षा मिशन हाई सकूल में करवाई। शास्त्री का वात्सल्य से ही तीव्र बुद्धि के थे। मिशन हाई स्कूल में मैट्रिक शिक्षा पास की। आर्य समाज के द्वारा वेद विशारद् एवं अन्य शास्त्रों का अध्ययन किया एवं सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा पास की। स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपना गुरु मानते थे।

विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन करके आप समाज में सबसे ज्यादा पढ़े लिखे शिक्षा शास्त्री बने। दादाजी की छत्रछाया में रहकर वे सर्वगुण हांसिल किये। सत्संग का शौक होने के कारण से दादाजी के साथ सत्संग मिलता रहता था। संगीत में रसीले बने, हारमोनियम बजाना सीखा इसके माध्यम से सत्संगों में जाकर अपना भजन उपदेश देने लगे। ग्राम भांकरी, जिला-दौसा में जाकर कुछ समय तक सर्विस भी की। जयपुर में सर मिर्जा इस्माइल के साथ इंजिनियरिंग के रूप में काम किया। सन 1950 में जयपुर नगर पालिका में मनोनीत पार्षद बने। तत्पश्चात राजस्थान विधानसभा का गठन हुआ। सन् 1952 से 1962 तक लगातार दस वर्ष तक फागी व चौमूं विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और विजयश्री प्राप्त की। 15 वर्ष तक ये अखिल भारतीय बैरवा महासभा के प्रधानमंत्री एवं राजस्थान सेवक संघ के प्रान्तीय बोर्ड के सदस्य, राजस्थान प्रदेश दलित वर्ग संघ के प्रधान मंत्री, जयपुर टेलीफोन एंडवाईजरी कमेटी के सदस्य औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र सम्मेलन समिति के सदस्य रहे।

इनके पार्षद व विधायक बनने से पहले सर्विस पीरियड में श्रीमती गंगादेवी पुत्री श्री मांगीलाल नाडला ग्राम-गरुडवासी, तहसील चाकसू, जिला जयपुर से विवाह हुआ। लेकिन गंगादेवी जल्दी ही अलविदा हो गई। मांगी लाल जी के अनुज श्री छोटे लाल जी की इकलौती बेटी नारायणी देवी से इनका पुर्नविवाह हुआ। नारायणी देवी अपने परिवार की बैखूबी से सेवा करने लगी समाज वालों के प्रति समाजसेविका का कार्य करते थी। शास्त्री जी अनुसूचित जातियों, शोषित पीड़ित समाज के गरीब लोगों के उत्थान हेतु चिन्तित रहते थे। आपने महाभारत शान्ति पर्व, राजप्रकरण अध्याय, ६५ श्लोक १३-१४-१५ यवना किराता गान्धाराश्चीना शर्वर बर्वरा अर्थात् मानधाता ने कहा- देवराज! मेरो राज्य में यवन, किरात, गान्धार, चीन, शर्बर, बर्वर (बैरवा), शक, तुषार, कङ्क पह्लव, आन्ध्र, मद्र, पौण्ड्र, पुलिन्द रमट और काम्बोज जाति के लोग रहते हैं।

आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन करके जातियों की महाभारत ग्रन्थ पढकर जातियों की खोज की। आपने बैरवा जाति के सम्बन्ध में शास्त्रों का अध्ययन कर बैरवा शब्द का नाम उजागर कर रोशन किया। आपने समाज में एकता के कठोर प्रयास किये। सत्संग इनका माध्यम रहा। इनके ससुर साहब श्री छोटू लाल जी नाडला इंदौर में एक मिल में कार्यरत होने के कारण इनका इंदौर अक्सर आना-जाना रहता था। वहां अखिल भारतीय बैरवा महासभा संस्था का गठन किया गया। जिसका प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष मास्टर झुंथा लाल जी जारवाल, अध्यक्ष बने। शास्त्री जी को महामंत्री बनाया गया। इसे संगठन के माध्यम से समाज को संगठित किया। आपने अपने बूरे नाम को सुधार करके बैरवा शब्द लगाने को कहा। समाज इनकी बात बखूबी से मानी। आपने जबरदस्त आन्दोलन कर जयपुर स्टेट में बैगार प्रथा खत्म करवाकर और अपने अथक प्रयास व अपने प्रभाव एवं समाज के सहयोग से अपनी बुद्धिमता का परिचय देते हुए ऑल इण्डिया बैकवर्ड शिड्यूल कास्ट कमीशन के सामने 180 सवालों का जबाव दिया। उक्त कमीशन ने इनके जबावों से संतुष्ट होकर बैरवा जाति का राजस्थान व मध्यप्रदेश में सरकारी गजट में नोटिफिकेशन जारी करवाया जिसकी बदौलत 31 दिसम्बर, 1956का दिन बैरवा समाज का ऐतिहासिक दिन हुआ। जिससे पूरे भारतवर्ष में धूमधाम से खुशी के साथ बैरवा दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। यह बात मनगढ़न्त नहीं है शास्त्रों युक्त है।

शास्त्री जी सर्वप्रथम फागी विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस से चुनाव लड़कर विजयश्री प्राप्त की थी। प्रचार प्रसार अपने मधुर मृदुल स्वभाव से सम्बोधित करके अपना लिखा हुआ गाना बहुचर्चित बुज मेरा क्या नाम रे, नदी किनारे गांव रे, पीपल नीचे सोगंध खाजा, छोड़ पुराना नाम रे। लोगों ने इस गाने को बहुत सराया। ग्रामीण महिलाऐं इनके नाम सुनकर सोचती की बहुत बड़ा शक्तिशाली आदमी होगा। इन्हें देखने आती और तब देखकर अचम्भित होती थी। इस नान्याभाया ने समाज का इतना नाम किया है। धन्य हो इसके माता-पिता को आपने समाज सुधार के साथ नुकता प्रथा बन्द करके गंगभोज का नाम दिया।

यह शास्त्री जी के प्रयासों का ही फल है। बैरवा जाति पर बड़े-बड़े जुल्म अत्याचार ढाये गये। जैसे शादी ब्याह में लड्डू या अन्य मिठाई नहीं बनने देना। पत्तल दोनें में नहीं खाने देना। रबड़ की टूंटियों से पानी पिलाना सार्वजनिक हैण्डपम्प, कुओं आदि से पानी नहीं भरने देने। गांव में गढ़ के आगे से होकर बारात या बिन्दौरी नहीं निकलने देना। दुल्हे को घोड़ी पर नहीं चढ़ने देना। दूल्हे को झंगा या बढ़िया कपड़े नहीं पहनने देना। औरतों को मुखजीदार घाघरा नहीं पहनने देना। जूते-जूतियां पहनकर नहीं जाने देना। गांव में चारपाई पर बैठकर हुक्का नहीं पीने देना। मंदिर में नहीं जाने देना, सरकारी स्कूलों, आश्रमों में शिक्षा नहीं ग्रहण करने देना इत्यादि जुल्मों के प्रति शास्त्री जी ने लड़ाई लड़ी और सफलता हांसिल की। इन्होंने एक बार अखिल भारतीय बेरवा महासभा का एक जुलुस (डोला) ग्राम कैरोद तहसील निवाई जिला टोंक में निकाला। जिसमें जबरदस्त शक्ति प्रदर्शन किया गया। जिससे आहत होकर राजस्थान के मुख्यमंत्री स्व. श्री हीरालाल जी शास्त्री ने श्री हरिशंकर सिद्धान्त शास्त्री जी को आग्रह करके कहा कि इन वानर सैना को वापिस इनके गन्तव्य स्थान पर भेज दो, इसके लिये सरकार की तरफ से रेलवे का फ्री टिकट दिया गया। उनकी सारी शर्तें मान ली गई। श्री शास्त्री जी ने अनेको कार्य किये विधायक काल में बजाज नगर के लिए संघर्ष किया। टोंक पुलिया के नीचे एक बस्ती बसाई। जिसमें गांव-गांव से लोगों को बुलाकर सेकड़ों प्लॉट एक रुपये प्रति गज में अलॉट कराये गय। बैंक व सरकार से लॉन दिलाकर मकान बनवाया गये। जो आज भी मौजूद है। उक्त बस्ती का नाम बजाज नगर स्वतंत्रता सनानी श्री जमना लाल बजाज के नाम से हुआ। उस जमाने में गांवों में जैसे चाकसू के जयप्रकाशपुरा, बगरू के नरवरिया गांव में बैरवा जाति की बारात को स्वर्ण जाति के लोगों ने रोकने का एलान किया। शास्त्री जी ने अपने प्रभाव से प्रशासन को सावचेत करके पुलिस दल द्वारा बारात को निकलवाई जो एक मिशाल है।

श्री हरिशंकर सिद्धान्त शास्त्री राजनैतिक, सामाजिक तो थे ही साथ ही व्यवसायी भी थे। इन्होंने 1964 में ग्राम चाडवास ताल छाप्पर (काले हिरण) के पास 30 एकड़ जमीन में नमक बनाने का प्लॉट लगाया। जिसमें बीस कुए करवाये डीजल इंजिन सैट लगाये तथा खारे पानी से नमक बनाया गया। कम्पनी का नाम हरिशंकर सिद्धान्त शास्त्री एण्ड कम्पनी (गुजराती नाम वाला नमक) या इस कम्पनी के बदौलत शास्त्री जी को सैण्ट्रल साल्ड एडवाइजरी कमेटी भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा/रीजनल साल्ट एडवाइजरी कमेटी का मैम्बर बनाया गया। मैम्बर बनन के पश्चात कई सुझाव दिये जो सरकार द्वारा माने गये। जिससे राजस्थान का नाम महशूर हुआ।

आपने अपने दादाजी स्वामी मुनिश्वरानन्द जी महाराज के सानिध्य एवं आशिर्वाद से मृदुल स्वभाव प्रखण्ड विद्वान सिद्धान्त शास्त्री गीता, महाभारत, रामायण उपनिषद आदि ग्रन्थों का इन्होंने गहन रूप में अध्ययन किया। इन्होंने अनुसूचित जातियों के दुल्हा दुल्हन के फेरे करना, सत्संग करवाना, यज्ञ करवाना इत्यादि कई सामाजिक कार्य किये। विशेष कर अखाध्य वस्तुओं का सेवन न करने का उपदेश दिया जिसकी बदौलत आज बैरवा जाति अग्रणी है। अन्तत: दिनांक 5 दिसम्बर, 1997 को इन्होंने देह त्याग गर मृत्यु का अल्गिंन कर जीवन से मुक्ति प्राप्त की। इनके किये गये कार्यों को सदैव याद किया जाता रहेगा।

धार्मिक सांस्कृतिक मानचित्र पर अंकित हैं। इसके अलावा 31 दिसम्बर को महर्षि बालीनाथ जी की स्मृति बैरवा दिवस के रूप

दलितकर्मियों की मांगें नहीं मानी गई तो नाक रगड़वा दूंगा

संविधान दिवस: एससी-एसटी रेलवे एंप्लाइज अधिवेशन में एससी आयोग के अध्यक्ष बोले

जयपुर। भारतीय संविधान दिवस पर रविवार को केपी स्टेडियम में एससी-एसटी

रेलवे एंप्लाइज एसोसिएशन का दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन शुरू हुआ। मंच से एससी कमीशन के अध्यक्ष राम शंकर कठेरिया ने विवादित बयान दे डाला। कठेरिया ने रेल कर्मचारियों की एसोसिएशन के अधिवेशन में छुट्टी नहीं देने की मांग पर यहां तक कह दिया कि आप मेरे पास आएं...जो अधिकारी दलित कर्मचारियों की मांग नहीं मानेगा....उसे नाक रगड़वा दूंगा।

उन्होंने कहा कि राजस्थान और हरियाणा में दलितों से भेदभाव हो रहा है। दलित मजदूरों से 14 घंटे काम करवाया जाता है और मजदूरी भी नहीं दी जाती है। इस मौके पर रेल राज्यमंत्री राजेन गोहेन ने कहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दो साल पहले 26 नवंबर को भारतीय संविधान दिवस घोषित किया था। बाबा साहेब ने संविधान में एससी-एसटी के लिए आरक्षण के जो प्रावधान किए, वे जरूरी थे। उन्होंने अधिवेशन में आने वाले कर्मचारियों को लीव और किराया दिए जाने की मांग स्वीकार करने के लिए भी अधिकारियों को निर्देश दिए। विधानसभा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल ने कहा संविधान लागू होने के इतने साल बाद भी आज संविधान का जो प्रीम्बल है, वो पूरी तरह लागू नहीं हो पाया है। उसे लागू करने में राजनीति फेल रही है। इस पर देशभर में एक बहस छेड़नी चाहिए। आज भी देश में दलितों के साथ सामाजिक और आर्थिक समानता नहीं मिली है। दलितों को घोड़े पर बैठने के लिए पुलिस सुरक्षा लेनी पड़ती है। राजनीतिक दलों में भी हमें अपनी बात कहने का अधिकार नहीं मिलता। रेल कर्मचारियों ने उत्तर-पश्चिम रेलवे में एससी-एसटी के म्यूचुअल ट्रांसफर पर लगी रोक का भी मुद्दा उठाया। जिला प्रमुख मूलचंद मीणा, रामकुमार वर्मा, उत्तर-पश्चिम रेलवे के जीएम टीपी सिंह, एडिशनल मेंबर स्टाफ मनोज पांडे, एसो. के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीएल बैरवा, महामंत्री अशोक कुमार मौजूद थे।

दलित आदिवासियों पर आयोजित... (पृष्ठ 1 का शेष)

श्री आर.के. आंकोदिया, पूर्व सदस्य, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग, जयपुर, श्री हेनरी थिपरेग, वरिष्ठ अधिवक्ता, व प्रख्यात अर्न्तराष्ट्रीय मानवाधिकार कार्यकर्ता, पिपुल्स वॉच, तमिलनाडू, श्री अजय कुमार जैन, वरिष्ठ अधिवक्ता, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर, श्री बी.एल.आर्य, पूर्व आई.ए.एस. प्रमुख शासन सचिव, (राजस्व), व सुश्री सुनिता सत्यार्थी, एडवोकेट, पूर्व सदस्य, राज्य महिला आयोग, जयपुर, जूरी सदस्यों के रूप में भाग लिया।

उक्त जूरी सदस्यों के समक्ष राजस्थान से 7 प्रकरण व तमिलनाडू से 4 प्रकरणों की सुनवाई की गई।

दलित अधिकार केन्द्र के मुख्य संरक्षक पी.एल. मीमरौठ ने राजस्थान में पुलिस द्वारा बढते दलित उत्पीडन व हिंसा के बारे में अवगत करवाते हुये कहा कि राजस्थान में पुलिस हिरासत में मारपीट करने से आये दिन दलित लोगो की मौत होना पुलिस कार्यशैली पर कलंक है। पुलिस हिरासत में होने वाली घटनाओ को गम्भीरता से लेते हुये इस जन सुनवाई का आयोजन किया गया है। माननीय जूरी सदस्यों की सिफारिशों को पुलिस प्रशासन के उच्च अधिकारियो को प्रेषित कर निम्न प्रकरणों में जूरी द्वारा दिये गये सुझाव की पालना सुनिश्चिम करने के बारे में लिखा जायेगा।

माननीय जूरी के सामने निम्न प्रकरणों को प्रस्तुत किया गया:-

1. ग्राम सांथा पुलिस थाना महवा, जिला दौसा में अनुसूचित जनजाति के युवक राजेन्द्र मीणा की पुलिस द्वारा सुनियोजित षडयन्त्र कर हत्या करने के प्रकरण को पुलिस द्वारा आत्महत्या के प्रकरण में बदलना पुलिस की घौर अमानवीय कार्यशैली को उजागर करता है। राजेन्द्र मीणा के सिर में लगी गोलियों की जांच करने पर सामने आया कि वह गोलियां राज. पुलिस की थी तो यह आत्महत्या कैसे हो सकती है। क्योंकि 70-80 पुलिसकर्मीयों में घेर कर राजेन्द्र मीणा की हत्या की थी।

2. ग्राम गारू, पुलिस थाना कठूमर, जिला अलवर में अनुसूचित जनजाति के युवक राजू मीणा की 2014 में पुलिस हिरासत में गम्भीर मारपीट करने के कारण से अलवर जेल में मृत्यु हो गई थी। इस प्रकरण में न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा जांच की गई जिसमें न्यायिक मजिस्ट्रेट ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि राजू मीणा की मृत्यु जेल में जाने से पूर्व की गई मारपीट का परिणाम है। इस मामले में आरोपी पुलिस अधिकारियों के खिलाफ भी कानूनी कार्यवाही करने का सुझाव दिया गया है लेकिन घटना के 3 साल बाद भी आरोपियो के खिलाफमुकदमा होने के बाद भी कोई कार्यवाही नही की गई।

3. ग्राम मानपुर-माचेडी, पुलिस थाना चन्दवाजी, जिला जयपुर में अनुसूचित जाति के नाबालिग युवक अजय कुमार उम्र 15 वर्ष को पुलिस चौकी मानपुर माचेडी के चौकी अधिकारी व अन्य पुलिस कमियों द्वारा दिनांक 13.10.2017 को घर से उठा कर ले गये और पुलिस चौकी में इतनी निर्दयता से इतनी गम्भीर मारपीट की जिसके कारण से अजय की पुलिस चौकी में उसी दिन सुबह 11 बजे अजय की मौत हो गई। इस सम्बन्ध में मृतक परिवार द्वारा थानाधिकारी चन्दवाजी, पुलिस चौकी मानपुर माचेडी के इन्चार्ज व अन्य पुलिस कर्मियों के खिलाफमुकदमा दर्ज करवाया गया लेकिन अभी तक आरोपी पुलिसकर्मी के खिलाफ किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नही हुई।

4. सुशीला पत्नि मणीप्रकाश बैरवा निवासी मारूति नगर, पुलिस थाना सांगनेर, जिला जयपुर दिनांक 16.09.2016 को रात के लगभग साढे नौ बजे पीडिता की सास प्रभाती देवी व देवर अरविन्द के साथ कहासुनी हो गई इस बात को लेकर पीडिता की सास प्रभाती देवी ने पुलिस को बुलाकर गिरफ्तार करवाने की धमकी दी। आधा घन्टे बाद रात्रि 10 बजे पुलिस थाना सांगानेर के पुलिसकर्मी पीडिता के घर में किवांड तोडकर कमरे के अन्दर घूस गये। पुलिस के डर से पीडिता का पति व देवर भाग गया लेकिन पीडिता सुशीला देवी को पुलिसवालों ने गम्भीर मारपीट की और बिना महिला पुलिसकर्मियों के पीडिता को पकडकर पुलिस थाना सांगानेर ले गये और वहां लेकर अवैध तरीके से पुलिस हिरासत में रखकर माारपीट की व पीडिता पर राजकार्य में बाधा का झूंठा मुकदमा दर्ज करवाया।

5. तमिलनाडू के तैन्जौर जिले से आये पीडित विरैयन ने बताया कि पुलिस द्वारा उसको 4 दिन अवैध तरीके से पुलिस हिरासत में रखकर प्रताडित किया गया क्योंकि वह कुरवार समुदाय से है इसलिये भी पुलिस ने उसकी एक नही सुनी। पुलिसवालों का मानना है कि ये जाति ही चोर होती है। इसलिए कुरवार जाति का होने के कारण से उसे पुलिस प्रताडना का शिकार होना पडा।

6. तमिलनाडू के कूडडालौर जिले से आई पीडिता सेलवारानी ने बताया कि पुलिस वालों ने आवासीय सम्पति को नष्ट किया और पीडिता व उसके परिवार को प्रताडित किया किया।

7. तमिलनाडू के शिवागनगई जिले के पीडित प्रवीन रेट्टीपलयम ने बताया कि पुलिस द्वारा एक नाबालिग बच्चे व अन्य 3 दलितों को गैर कानूनी तरीके से पुलिस हिरासत में रखकर मारपीट की गई व प्रताडित किया गया। इस प्रकार दलित प्रताडना के 10 केस्रो के बारे में बताया गया।

शशि खंडेलवाल की स्मृति में किया 461 लोगों ने रक्तदान

अंगदान, देहदान नेत्रदान का लिया 78 लोगों ने संकल्प

जयपुर। श्रीमती शशि खंडेलवाल मेमोरियल ट्रस्ट, जयपुर की ओर से रविवार को महावीर पब्लिक स्कूल में 18वां विशाल रक्तदान शिविर का आयोजित किया गया। इसमें पूर्व महापौर ज्योति खण्डेलवाल एवं शरद खण्डेलवाल के नेतृत्व 416 लोगों ने रक्तदान किया। 78 लोगों ने अंगदान, देहदान नेत्रदान के लिए संकल्प पत्र भरा। रक्तदान करने में सास-बहू, मां-बेटी, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहिन आदि लोगों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन शारदा पीठाधीश्वर सीताराम दास महाराज ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। राजस्थान विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता रामेश्वर डूडी, पूर्व मंत्री ब्रजकिशोर शर्मा, पूर्व सांसद अश्क अली टांक, शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रताप सिंह खाचरियावास सहित पीसीसी डीसीसी के अन्य पदाधिकारी ने रक्तदान किया। शिविर के प्रबंध न्यासी शरद खण्डेलवाल ने बताया कि ट्रस्ट यह 18वां शिविर है। शिविर में जी मरुधरा डीएनए के सीईओ जगदीश चन्द्र, वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र गोधा सहित विभिन्न गणमान्य लोग उपस्थित थे। काले हनुमान मंदिर के महंत गोपालदास जी महाराज, नरवर सेवा समिति के महामंत्री बी.एम.शर्मा सहित अन्य मंदिरों के महंतों ने शिविर में शिरकत की।

शिविर में प्रतिपक्ष के नेता रामेश्वर डूडी, ओलंपियन कृष्णा पुनिया, महावीर स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र गोधा एवं ट्रस्ट के पदाधिकारियों की ओर से रक्तदान करने वाले लोगों को सम्मानित किया। इन्हें प्रशस्ति पत्र और माला पहनाकर सम्मानित किया गया।

महादेव बैरवा अध्यक्ष बने

बस्सी। अखिल भारतीय बैरवा महासभा तहसील शाखा बस्सी के चुनाव में श्री महादेव बैरवा को अध्यक्ष व श्री राकेश बैरवा को महामंत्री पद पर मुख्य चुनाव अधिकारी श्री नाथूलाल बंशीवाल ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

इस चुनावी मिटिंग में जिलाध्यक्ष पूरणमल बैरवा, जिला महामंत्री श्री ओमप्रकाश कुवाल, सहायक चुनाव अधिकारी ललित कुमार लोदिया, श्री बाबूलाल मेहरा सहित सैकड़ो महिलाऐं व पुरुष मौजूद थे।

कार्यक्रम की शुरुआत बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण से किया गया

सलीम कागजी की प्रथम पुण्यतिथि पर शिविर में 279 लोगों ने किया रक्तदान

जयपुर। सलीम कागजी फाउंडेशन की ओर से स्व. कागजी की प्रथम पुण्यतिथि पर कांवटियों का खुर्रा स्थित अग्रवाल जनक धर्मशाला में चिकित्सा एवं रक्तदान शिविर लगा। संयोजक अमीन कागजी ने बताया कि महात्मा गांधी अस्पताल के सहयोग से चिकित्सा शिविर में 900 से अधिक लोगों की निशुल्क जांचें कर दवाएं

दी गईं। वहीं 279 रक्तदाताओं को फाउंडेशन की ओर से प्रशस्ति पत्र स्मृति चिह्न भेंट किए गए। इस दौरान प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. अर्चना शर्मा, जयपुर जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रताप सिंह खाचरियावास, पूर्व सांसद महेश जोशी, पूर्व मंत्री ब्रजकिशोर शर्मा समेत कई लोगों ने रक्तदाताओं की हौसला अफजाई की।

श्री बाबा समाचार पत्र के विशिष्ठ सदस्य बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं

के.एल. बैरवा
चीफ इंजिनियर
दिल्ली विद्युत बोर्ड

सीताराम बैरवा
असनपुरा-सी, जयपुर

प्रान्तीय बैरवा प्रगति संस्था जयपुर (राज.)

रजि. नं. 1178/2015-16

प्रधान कार्यालय - सी-57, महेश नगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : 9928260244, 9982880351, 7073909291
E-mail : bairwapragatisanstha@gmail.com

बैरवा परिचय निर्देशिका जयपुर महानगर में प्रकाशन हेतु

पारिवारिक परिचय आवेदन पत्र

क्रमांक ..... दिनांक .....

नाम (परिवार के मुखिया) ..... पिता का नाम .....

वर्तमान पता .....

..... वार्ड नं. ..... विधानसभा क्षेत्र .....

फोन/मो. ..... (Whatsapp No.) ..... ई-मेल .....

गाँव का पता .....

.....

शिक्षा ..... आयु ..... व्यवसाय .....

पद ..... विभाग .....

गौत्र - स्वयं ..... माँ ..... पत्नि ..... दादी .....

अन्य .....

पारिवारिक विवरण (विवाहित पुत्रियों के अलावा)

क्र.सं.	नाम	जन्म/आयु	मृत्यिका में सम्बन्ध	शैक्षणिक योग्यता	व्यवसाय पद व विभाग	वैवाहिक स्थिति
1.						
2.						
3.						
4.						
5.						
6.						
7.						
8.						
9.						
10.						
11.						

हस्ताक्षर मुखिया

स्वामीत्व, मुद्रक, प्रकाशक, रजनी के लिए एम.बी. प्रिन्टर्स एफ-76 ए, करतारपुरा इण्ड. एरिया मोरानी वर्क्सशॉप के पास जयपुर से मुद्रित एवं सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15 (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-भवनेश धावनिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। मो.-9928260244, 9829271582 E-mail : shreebaba_2008@yahoo.com